उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 4

अर्थ के लिए दृष्टिकोण

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना..1

वस्तुपरक 2

पृष्ठभूमि...3

प्रभाव..4

व्यक्तिपरक 6

पृष्ठभूमि...6

प्रभाव..7

संवादात्मक..9

पृष्ठभूमि...10

प्रभाव..11

तुलना..13

अधिकार-संवाद और वस्तुपरक 13

अधिकार-संवाद और व्यक्तिपरक 14

उपसंहार...15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय चार

अर्थ के लिए दृष्टिकोण

प्रस्तावना

कभी न कभी, हम सभी ने बाइबल में किसी अनुच्छेद के अर्थ के बारे में लोगों को असहमत होते हुए सुना है। अक्सर, ये वार्तालाप एक ही तरीके से समाप्त होते हैं। एक व्यक्ति कहता है, "ठीक है, आपकी व्याख्या सिर्फ आपकी राय है।" लेकिन दूसरा व्यक्ति जवाब देता है, "नहीं, यह सिर्फ मेरी राय नहीं है। यह एक तथ्य है।" ये टिप्पणियां बाइबल की व्याख्या में सबसे मूलभूत प्रश्नों में से एक को दर्शाते हैं: जब हम बाइबल में किसी अनुच्छेद को पढ़ते हैं और इस बारे में निष्कर्ष पर आते हैं कि इसका अर्थ क्या है, क्या हमारा निष्कर्ष एक वस्तुपरक तथ्य है, एक व्यक्तिपरक राय है, या क्या यह इन दोनों के बीच में कुछ है?

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह चौथा अध्याय है: *व्याख्या की बुनियाद,* और हमने इसके शीर्षक रखा है "अर्थ के लिए दृष्टिकोण।" इस अध्याय में, हम उन कुछ प्रमुख तरीकों को देखेंगे जिन्हें व्याख्याकारों ने पहचाना है और पवित्र शास्त्र के अर्थ को समझाया है।

जब हम उन अनुच्छेदों के अर्थ के बारे में प्रश्न पूछना शुरू करते हैं जिन्हें हम बाइबल में पाते हैं, तो यह ज्ञान की वस्तुओं और ज्ञान के व्यक्तियों के बीच एक बुनियादी अंतर बनाने के द्वारा शुरू करने में मदद करेगा। ज्ञान की वस्तुएं वे चीज़ें हैं जिन्हें हम समझने की कोशिश करते हैं। और ये वस्तुएं या तो अमूर्त हो सकती हैं, जैसे विचार, या मूर्त हो सकती हैं, जैसे लोग या स्थान।

उदाहरण के लिए, जीवविज्ञानी पशुओं और पौधों जैसी वस्तुओं का अध्ययन करते हैं। और संगीतकार संगीत या संगीत वाले वाद्यंत्रों जैसी वस्तुओं का अध्ययन करते हैं। इसके विपरीत, ज्ञान के व्यक्ति वे लोग हैं जो अध्ययन करते हैं। जीवविज्ञान के क्षेत्र में, स्वयं जीवविज्ञानी लोग ज्ञान के विषय हैं। और संगीत के क्षेत्र में, संगीतकार लोग ज्ञान के विषय हैं।

इसलिए, जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हम व्यक्ति हैं, क्योंकि हम वे लोग हैं जो व्याख्या कर रहे हैं। और हमारे अध्ययन की वस्तु बाइबल है, क्योंकि यह वह वस्तु है जिसकी हम व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं।

अब, यह देखना आसान है कि हर प्रकार की मानवीय समझ में वस्तुओं और व्यक्तियों का ज्ञान दोनों शामिल है। लेकिन ज्ञान की खोज में वस्तुएं और व्यक्ति एक साथ काम कैसे करते हैं?

खैर, मानवीय ज्ञान की वस्तुओं और व्यक्तियों की ओर तीन प्रमुख दृष्टिकोणों के बारे में बात करने में अक्सर यह मददगार होता है। सबसे पहले, कुछ लोग उस दृष्टिकोण की ओर प्रवृति रखते हैं जिसे हम वस्तुपरकवाद कहते हैं। वस्तुपरकविद् विश्वास करते हैं कि उचित परिस्थितियों के तहत, निष्पक्ष या वस्तुपरक ज्ञान तक पहुंचना संभव है। दूसरा, अन्य लोग उस दृष्टिकोण की ओर प्रवृति रखते हैं जिसे व्यक्तिपरकवाद कहते हैं। व्यक्तिपरकविद् मानते हैं कि हमारा ज्ञान सदैव हमारे व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित रहता है, जिससे निष्पक्ष वस्तुपरकता असंभव हो जाती है। और तीसरा, कुछ लोगों ने बीच का मार्ग निकाला है जिसे हम संवादवाद कह सकते हैं। यह दृष्टिकोण वस्तुपरक वास्तविकता और हमारे व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों के बीच निरंतर "संवाद" या परस्पर क्रिया पर जोर देता है।

आश्चर्य की बात नहीं, कि बाइबल की व्याख्या में इन तीनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। इसलिए, जब हम इस अध्याय में पवित्र शास्त्र के अर्थ पर विचार करते हैं, और जब हम इस प्रश्न का

उत्तर देने का प्रयास करते हैं तो हम इनमें से प्रत्येक पर ध्यान देंगे: क्या बाइबल के किसी अनुच्छेद की हमारी समझ वस्तुपरक है, व्यक्तिपरक है या संवादात्मक है?

इस अध्याय में, हम अर्थ के लिए इन तीनों प्रमुख दृष्टिकोणों में से प्रत्येक पर ध्यान-केंद्रित करेंगे। सबसे पहले हम वस्तुपरक दृष्टिकोणों पर विचार करेंगे। दूसरा हम व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों को देखेंगे। और तीसरा, हम संवादात्मक दृष्टिकोणों का पता लगाएंगे। आइए पवित्र शास्त्र के अर्थ के लिए वस्तुपरक दृष्टिकोण के साथ शुरू करें।

वस्तुपरक

हम सभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिनके पास हर प्रकार के विषय के बारे में राय होती है, लेकिन जिस पर वे विश्वास करते हैं उसका वस्तुपरक तथ्यों के साथ समर्थन करने की उनमें कोई योग्यता नहीं होती है। बेशक, जब बाइबल की व्याख्या करने की बात आती है तो इसी तरह की बात सच है। बाइबल के कई अनुच्छेदों का अर्थ क्या है, इस पर रायों की कमी नहीं है, लेकिन बहुत सारे लोग अपनी व्याख्याओं को वस्तुपरक तथ्यों पर आधारित करने की कोशिश भी नहीं करते हैं। वे सिर्फ जोर देकर वह बात कहते हैं जो वे मानते हैं कि बाइबल के किसी अनुच्छेद का अर्थ है और उसे वहीं छोड़ देते हैं। जब हम बार-बार इस समस्या में पड़ते हैं, तो यह बहुत निराशाजनक हो सकता है, और यह हम सब में पवित्र शास्त्र के उस समझ को पाने की ललक पैदा कर सकता है जो कम से कम कुछ वस्तुपरक हों।

यूरोप में सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के बाद से, बाइबल की व्याख्या को वस्तुपरकवाद ने बहुत प्रभावित किया है। मूल रूप से, विद्वानों ने माना है कि वे निष्पक्षता से पवित्र शास्त्र की व्याख्या कर सकते हैं, और यह कि वे अपेक्षाकृत निश्चितता के साथ इसके अर्थ को जान सकते हैं। अधिकांश वस्तुपरकविद् यह तर्क नहीं देते हैं कि जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं तो हम अपने सभी व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और दृष्टिकोणों को दूर कर सकते हैं। लेकिन वे जरूर मानते हैं कि इन्हें हम अपनी व्याख्याओं को प्रभावित करने से रोक सकते हैं, ताकि हम पवित्र शास्त्र की सच्ची समझ तक पहुँच सकें। उदाहरण के लिए, हम सब बाइबल के पहले पद उत्पत्ति 1:1 को जानते हैं, जो कहता है:

> **आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)।**

अधिकांश लोग इस बात से सहमत होंगे कि इस पद के मूल अर्थ को समझना अपेक्षाकृत आसान है। कम से कम, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि इसका अर्थ है "परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है।"

जब वस्तुपरकविद् लोग कहते हैं कि उत्पत्ति 1:1 का अर्थ है कि, "परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है," तो वे मानते हैं कि वे इस पद को बिना किसी पूर्वाग्रह के समझते हैं। इसलिए, वे यह सोचने की प्रवृति रखते हैं कि जो कोई उनकी व्याख्या को अस्वीकार करता है, तो वह अज्ञानता के कारण इस स्पष्ट तथ्य से असहमत होता है।

अब, क्यों बाइबल के कई व्याख्याकारों ने पवित्र शास्त्र के अर्थ के लिए इस दृष्टिकोण का पालन किया? और बाइबल की व्याख्या-शास्त्र में वस्तुपरकवाद के परिणाम क्या रहे हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, हम दो दिशाओं में देखने के द्वारा व्याख्या के वस्तुपरक दृष्टिकोणों की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम इन दृष्टिकोणों के दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझेंगे। और दूसरा, हम बाइबल की व्याख्या पर उनके प्रभाव का उल्लेख करेंगे। आइए व्याख्या के वस्तुपरक दृष्टिकोणों की पृष्ठभूमि को देखने के द्वारा शुरू करें।

पृष्ठभूमि

वस्तुपरकवाद की पहचान आधुनिक दर्शनशास्त्र की नदी में सबसे प्रमुख धारा के साथ की जा सकती है — वह धारा जिसे हम वैज्ञानिक तर्क-बुद्धिवाद कहेंगे। 1596 से 1650 तक रहने वाले डेसकार्टेस को, अक्सर आधुनिक तर्क-बुद्धिवाद का पिता कहा जाता है, क्योंकि सत्य के सर्वोच्च निर्णायक के रूप में उन्होंने तर्क को बढ़ावा दिया। उनके दृष्टिकोण से, धर्म, परंपराएं, मान्यताएं, अंतर्ज्ञान और अंधविश्वास जैसी चीज़ें हमारी सोच को भ्रमित करती हैं और हम से वस्तुपरक वास्तविकता को छिपाती हैं। लेकिन डेसकार्टेस ने जोर देकर कहा कि कठोर तार्किक सोच पर निर्भरता मनुष्यों को भ्रम से मुक्त करती है और हमें वस्तुपरक सत्य की खोज करने में सक्षम बनाती है।

वैज्ञानिक तर्क-बुद्धिवाद, प्राकृतिक विज्ञानों में विकासों से भी प्रभावित हुआ था। 1561 से 1626 तक रहे फ्रांसिस बेकन को अक्सर आधुनिक विज्ञान का पिता कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने भौतिक संसार के अध्ययन के लिए तर्कसंगत, तार्किक सोच को लागू किया था। वास्तव में, बेकन ने इस विचार को बढ़ावा दिया कि क्रमबद्ध, प्रयोगसिद्ध जाँच — जिसे हम अक्सर "वैज्ञानिक पद्धति" कहते हैं — मानवीय व्यक्तिपरकता को सीमित करता है, हमारे चारों ओर के संसार की एक वस्तुपरक समझ को पाने के लिए हमें योग्य बनाता है।

वैज्ञानिक तर्क-बुद्धिवाद इतना प्रभावशाली था कि सत्रवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के मध्य तक के अध्ययन के लगभग हर क्षेत्र ने इसके दृष्टिकोणों को अपनाया। यहाँ तक कि धर्म और ईश्वरीय-ज्ञान जैसे विषयों को तार्किक, वैज्ञानिक विश्लेषण के अधीन किया गया है। बेशक, तर्कसंगतता और विज्ञान की अवधारणाएं सदियों के दौरान विभिन्न तरीकों से बदल गई हैं। लेकिन वस्तुपरकवाद की मूल धारणा एक जैसी ही रही हैं, विशेष रूप से: तर्कसंगत वैज्ञानिक विश्लेषण का पालन करके, हम वस्तुपरक ज्ञान पर पहुँच सकते हैं।

बीसवीं शताब्दी में, आधुनिक वस्तुपरकवाद को एक व्यापक दार्शनिक दृष्टिकोण द्वारा चरम पर ले जाया गया था जिसे संरचनावाद कहा जाता था। सरल शब्दों में कहें, तो संरचनावादियों ने तर्कसंगत और वस्तुपरकता का उपयोग हर उस चीज़ की संपूर्ण समझ प्राप्त करने के लिए किया, जिनका उन्होंने अध्ययन किया — जिसमें समाजशास्त्र, कला, भाषा और साहित्य शामिल है। साहित्य की व्याख्या में वस्तुपरकता के लिए उनकी अभिलाषा इतनी चरम पर थी कि संरचनावादियों ने हर उस विचार का खंडन किया जो व्यक्तिपरकता के किसी भी अंश को प्रस्तुत करता था। लेखकों के इरादे, मूल श्रोताओं की जरूरतें और आधुनिक पाठकों की राय, तर्कसंगत वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए बहुत व्यक्तिपरक माने गए थे। लेकिन संरचनावादियों को पक्का विश्वास था कि विशुद्ध तर्कसंगत विश्लेषण उन्हें उन ग्रंथों के वस्तुपरक समझ को प्रदान कर सकता है जिनकी उन्होंने व्याख्या की थी।

> परमेश्वर हम से संपूर्ण लोगों के रूप में मिलता है। उसने हमारे हर पहलू को बनाया है। उसी प्रकार उसने हमारी बुद्धि को बनाया है; उसने हमारे अंतर्ज्ञान को बनाया है; उसने हमारी भावनाओं को बनाया है। उसने यह सब कुछ बनाया है, और वह चाहता है कि हम अपने पूरे मन और आत्मा और शक्ति और बुद्धि के साथ प्रेम में प्रतिक्रिया दें, इसलिए यह हमारे हर पहलू को शामिल कर रहा है। इसलिए बाइबल की एक संकीर्ण बुद्धिवादी समझ पर्याप्त नहीं है, और एक संकीर्ण भावनात्मक या सहज ज्ञान युक्त वाली समझ पर्याप्त नहीं है। आपको हर उस चीज़ के साथ प्रतिक्रिया देनी है जो आप में है। यही वह बात है जिसकी माँग परमेश्वर कर रहा है। और यह सत्य भी है कि पाप हमारी बुद्धि और हमारे अंतर्ज्ञान दोनों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए प्रभु ने यह प्रबंध किया है ताकि हम एक मायने में एक को दूसरे से सही करने की शुरुवात कर सकें। ठीक? इसलिए लोगों का

> सहज रूप से किसी विचार के प्रति झुकाव हो सकता है और वे पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं और वे कहते हैं, "सच में, जब मैं इस पर अपनी बुद्धि को लगाता हूँ, तो मैं देख सकता हूँ कि मेरे अंतर्ज्ञान को सुधार की आवश्यकता है।" और इसके उलट भी, ठीक है ना? यह कि कभी-कभी मेरे पास बौद्धिक विचार होते हैं और मुझे कहने की जरूरत है कि यह उससे बड़ा है। और अंतर्ज्ञान का भाव मुझे चेतावनी दे सकता है, आप जानते हैं, शायद आप विचार से दूर रहने में भला समझें क्योंकि यह बाइबल संबंधी नहीं है।
>
> — डॉ. वर्न पोएथ्रेस

अर्थ के लिए वस्तुपरक दृष्टिकोणों के दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखने के बाद, आइए अपना ध्यान उस प्रभाव की ओर लगाएं जो बाइबल की व्याख्या पर वस्तुपरक दृष्टिकोण का रहा है।

प्रभाव

तर्कसंगत वैज्ञानिक वस्तुपरकवाद ने बाइबल की व्याख्या को दो बुनियादी तरीकों से प्रभावित किया है। सबसे पहले, यह हमें उस ओर ले गया है जिसे हम आलोचनात्मक बाइबल अध्ययन कह सकते हैं। और दूसरा, इसने सुसमाचारीक बाइबल अध्ययन को भी प्रभावित किया है।

आलोचनात्मक विद्वान आमतौर पर तर्क देते हैं कि विज्ञान, पुरातत्व और इतिहास द्वारा उपयोग किए जाने वालों के समान ही, पवित्र शास्त्र का मूल्यांकन करने का सबसे अच्छा तरीका तर्कसंगत जाँच है। दुःख की बात है, कि आलोचनात्मक विद्वान अक्सर इस प्रकार की जाँच की सीमाओं को पहचानने में विफल रहते हैं, इसलिए वे पवित्र शास्त्र के कई दावों और शिक्षाओं को अस्वीकार कर देते हैं।

आलोचनात्मक विद्वानों के विपरीत, सुसमाचारीय लोग जोर देते हैं कि पवित्र शास्त्र एकदम सत्य और आधिकारिक है, और यह कि सभी वैज्ञानिक निष्कर्ष अंततः इसकी शिक्षाओं के अधीन होने चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम विज्ञान, पुरातत्व और इतिहास से बाइबल के बारे में महत्वपूर्ण बातें नहीं सीख सकते हैं। सही रीति से उपयोग और बाइबल के अधिकार तले समर्पण में, तर्क और वैज्ञानिक विधियाँ बाइबल में अर्थ खोजने के लिए बहुत ही उपयोगी उपकरण हैं। और इन विषयों से प्राप्त अंतर्दृष्टि अक्सर हमें पवित्र शास्त्र के उन पहलूओं को समझने में मदद करती है जो वैज्ञानिक, पुरातात्विक और ऐतिहासिक जानकारी से संबंध रखते हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र के दावों और शिक्षाओं को खारिज करने के लिए इन विषयों का उपयोग कभी नहीं किया जाना चाहिए।

> बाइबल को पढ़ने और अध्ययन करने वाले प्रत्येक जन के पास उसकी व्याख्या का कोई तरीका होता है। यह ऐसा प्रश्न है कि क्या हम वास्तव में उस तरह की विधि से अवगत हैं जिसका हम उपयोग कर रहे हैं और उन प्रश्नों के बारे में सावधानीपूर्वक सोचते हैं, जिनको हम पवित्र शास्त्र के लिए पूछ रहे हैं ,और हम उत्तर कैसे खोजते हैं। मैं वास्तव में उन लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ जो अभी बाइबल का अध्ययन करने और समझने की शुरूआत कर रहे है कि वे उन प्रश्नों को जिन्हें वे उन प्रत्येक अनुच्छेदों से पूछते हैं जिसका वे अध्ययन कर रहे हैं, तो अनुसरण करने की शुरूआत करने के लिए कुछ नियमित चरणबद्ध विधि को लें। लेकिन यह कहना महत्वपूर्ण है कि बाइबल की व्याख्या एक विज्ञान नहीं है; यह एक कला है। और यह ऐसा नहीं है कि यदि हम सिर्फ सही प्रश्नों को पूछें तो ही हम बाइबल के पाठ्यांश का पूरा अर्थ सदैव समझ सकते हैं। और इसलिए, मैं

> सोचता हूँ कि जैसे-जैसे समय बीतता है, हम सीखते हैं कि सिर्फ गुलाम बनकर एक विधि का अनुसरण न करें, बल्कि पवित्र शास्त्र के किसी भी विशेष अनुच्छेद की व्याख्या करने में पवित्र आत्मा की अगुवाई के लिए भी मन को खोले रखें।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

> **जब हम बाइबल** की व्याख्या में विशुद्ध विधि को लागू करते हैं, तो यह इस बात में फायदेमंद है कि यह हमें ईमानदार बनाए रखती है। जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तो यह हमें लापरवाह होने से या उचित रीति से सूचित न होने से बचाती है ... क्या आप जानते हैं कि, एक अच्छी पद्धति पर आधारित होना हमें हमारा अभ्यासकार्य करने के लिए प्रेरित करती है, और इस तरह यह कर्मठता और एकाग्रता को बढ़ावा देती है। उसी समय पर, पद्धतिगत विशुद्धता कई बार बाइबल को वह बात कहने की अनुमति नहीं देने की ओर ले जा सकती है जो वह कह रही है। यह संकीर्ण व्याख्याओं को जन्म दे सकती है। इसके लिए यहून्ना 13 मेरे पसंदीदा उदाहरणों में से एक है, जो पांव-धोने की कहानी है। यदि आप इसे विवेचनात्मक पद्धति जैसा पढ़ते हैं जैसा कि हममें से कईयो ने अब तक सीखा है, तो यूहन्ना 13 से इस दृढ़ विश्वास के साथ निष्कर्ष निकालना आसान है कि यह सिर्फ सेवार्थ में एक सबक है। लेकिन जितना अधिक मैं यूहन्ना के उद्देश्य और एक संपूर्ण के रूप में कैनन के अंतर्गत इस अनुच्छेद पर विचार करता हूँ, तो मैं उतना ही अधिक आश्वस्त हो गया हूँ कि यूहन्ना 13 वास्तव में उसी कहानी वृत्तांश का एक नाटकीय रूप है जिसे पौलुस फिलिप्पियों 2 में प्रस्तुत करता है जहाँ वह कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, ... आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली ... इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, ... वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; ... हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। हमारे पास इन दोनों अनुच्छेदों में पूर्व-महिमा, आत्म-शून्यता और सेवा, और फिर बाद वाले पुनरागमन, और बाद वाली महिमा की कहानी का वृत्तांश है। यह उसके समान है जिसके बारे में पेलिकन पूर्व-अस्तित्व, शून्यता और महिमाकरण की ख्रीष्ट-विद्या के रूप में बात करता है। और यूहन्ना में शाब्दिक सुराग हैं जो आपको वहाँ ले जाते हैं, लेकिन वे सूक्ष्म हैं। और इसलिए, मैं सोचता हूँ कि यह महत्वपूर्ण है कि जब हम बाइबल को पढ़ते हैं तो ध्यान में रखें कि पद्धति, लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक साधन है। यह अपने आप में लक्ष्य नहीं है, और इसलिए पवित्र शास्त्र को उचित रीति से समझना लक्ष्य है। यही बात हमेशा है।
>
> — डॉ. कैरी विन्ज़ैन्ट

अर्थ के लिए वस्तुपरक दृष्टिकोण कई तरीकों से हमारी मदद कर सकते हैं। उनके पास तर्क से निष्कर्ष निकालने और व्याख्या के उचित तरीकों का लाभ है जो बाइबल की सावधानीपूर्वक और जिम्मेदारी से व्य़ाख्या करने में हमारी मदद कर सकते हैं। लेकिन बाइबल की व्याख्या के लिए यह दृष्टिकोण कितना भी मूल्यवान हो, हमें सदैव स्वयं को याद दिलाना होगा कि अंततः सिर्फ परमेश्वर ही

अपने ज्ञान में वस्तुपरक है क्योंकि उसकी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं है। हम लोग कितना भी कठिन प्रयास कर लें, मनुष्य कभी भी पूरी रीति से वस्तुपरक, तथ्यों का पूरी तरह से निष्पक्ष जाँचकर्ता नहीं हो सकता। इसलिए, वस्तुपरक दृष्टिकोणों के लाभों से नजर को हटाए बिना, हमें इस बात की व्यापक समझ चाहिए कि पवित्र शास्त्र के अर्थ को खोजने में क्या शामिल है।

अर्थ के लिए वस्तुपरक दृष्टिकोणों की इस समझ को ध्यान में रखकर, आइए अपने ध्यान को व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों की ओर लगाएं।

व्यक्तिपरक

व्यक्तिपरकवाद के कई अलग-अलग प्रकार हैं। लेकिन सामान्य तौर पर, हम कह सकते हैं कि व्यक्तिपरकविद् मानते हैं कि मनुष्य और संसार, और विशेष रूप से विश्वास के मामले, अक्सर वैज्ञानिक तर्क-बुद्धिवाद से समझने के लिए बहुत जटिल होते हैं। इसलिए, अर्थ के लिए उनकी खोज आमतौर पर अंतर्ज्ञान और भावनाओं जैसे व्यक्तिगत संकायों पर दृढ़ता से निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 13:34-35 में, यीशु ने यह सुपरिचित निर्देश दिया:

> मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ: कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:34-35)।

एक स्तर पर, यीशु की आज्ञा अपेक्षाकृत स्पष्ट है: हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। लेकिन प्रेम क्या है इसके लिए विभिन्न लोगों के बहुत अलग-अलग विचार हैं।

प्रेम क्या है इसको खोजने के लिए एक वस्तुपरक व्यक्ति पवित्र शास्त्र में खोज सकता है। लेकिन एक व्यक्तिपरकविद् अपने स्वयं की शर्तों पर प्रेम को परिभाषित करने, और फिर उस परिभाषा के अनुसार कार्य करने के लिए अधिक इच्छुक हो सकता है।

अर्थ के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों की हमारी चर्चा वस्तुपरक दृष्टिकोणों की चर्चा के समान होगी। सबसे पहले, हम इन व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों के दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझेंगे। और दूसरा, हम बाइबल की व्याख्या पर उनके कुछ प्रभावों का उल्लेख करेंगे। आइए व्याख्या के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों की पृष्ठभूमि के साथ शुरू करें।

पृष्ठभूमि

आधुनिक व्यक्तिपरकवाद ने सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के ज्ञानोदय के वस्तुपरकवाद के लिए प्रतिक्रिया में आंशिक रूप से प्रमुखता प्राप्त की। स्कॉटिश संशयवादी, 1711 से 1776 तक रहे डेविड ह्यूम जैसे दार्शनिकों, ने तर्क दिया कि तर्क-शक्ति और वैज्ञानिक अध्ययन हमें संसार के बारे में वस्तुपरक ज्ञान नहीं दे सकते। ह्यूम और अन्यों ने माना कि हमारी भावनाएं, इच्छाएं और मानसिक श्रेणियां सदैव हमारी सोच को प्रभावित करती हैं, जो निष्पक्ष वस्तुपरकता को असंभव बनाती है।

1724 से 1804 तक रहे जर्मनी के दार्शनिक इम्मानुएल कांट, ने भी व्यक्तिपरक विचारधारा में अत्यधिक योगदान दिया। कांट ने तर्क दिया कि हम वस्तुपरक वास्तविकता को जैसा कि वह वास्तव में है, नहीं जान सकते; हम *डिंग ऐन सिच,* या "स्वयं किसी चीज़" को कभी नहीं जान सकते हैं। उन्होंने माना कि हम संसार को सिर्फ वैसा ही समझते हैं जैसा यह हमें दिखाई देता है, और फिर हमारे दिमागों में पहले

ही से मौजूद तर्कसंगत श्रेणियों या अवधारणाओं के माध्यम से अपनी धारणाओं को हम संसाधित करते हैं। कांट ने निष्कर्ष निकाला कि जिसे हम आमतौर पर "संसार का ज्ञान" कहते हैं, उसमें सदैव हमारे प्रयोगसिद्ध धारणाएं और हमारी मानसिक अवधारणाएं शामिल होती हैं।

ह्यूम और कांट के बाद, अर्थ के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोण का रोमांसवाद जैसे आंदोलनों के माध्यम से उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित होना जारी रहा। रोमांसवादियों और उनका अनुसरण करने वालों ने तर्क दिया कि भावबोधक कविता, नाटक, संगीत और दृश्य कलाएं वास्तविकता की उस समझ को प्रदान करती हैं जो तर्कसंगत, वैज्ञानिक प्रवचन से बहुत अधिक बेहतर हो सकती हैं। उन्होंने यह भी जोर देकर कहा कि तर्कवाद का प्रभाव अमानवीय था क्योंकि यह अंतर्ज्ञान और भावना जैसी महत्वपूर्ण मानवीय विशेषताओं का अवमूल्यन करता है। और इसलिए, उन्होंने जोर दिया कि जब व्याख्याकार ग्रंथों की व्याख्या करते हैं तो उन्हें स्वयं अपने व्यक्तिगत मानवीय विशेषताओं पर भरोसा करना चाहिए।

अर्थ के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोण फिर से बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उस आंदोलन में स्थानांतिरत हुआ जिसे उत्तर-संरचनात्कता के रूप में जाना जाता है। फ्रांसीसी सिद्धांतकार जीन-फ्रेंकोइस ल्योटार्ड, जैक्स डेरिडा, मिशेल फाउकॉल्ट और कई अन्यों ने बीसवीं शताब्दी के संरचनात्मकवाद की वस्तुपरकता को खारिज कर दिया। वास्तव में, कई तो वस्तुपरकवाद से इतनी दूर चले गए कि उन्होंने वस्तुपरकता के लिए सभी आशाओं को नकार दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञान के वस्तुपरक दावों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे बहुत अधिक सीमित हैं और बहुत अधिक व्यक्तिपरक पूर्वाग्रहों, भावनाओं और मौजूदा मान्यताओं से प्रभावित हैं।

इसके अलावा, कई उत्तर-संरचनावादी उन्नीसवीं सदी के जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे के साथ-साथ बीसवीं सदी के अस्तित्ववादियों से सहमत थे, जिन्होंने कहा था कि ज्ञान के लिए सभी दावे मुख्य रूप से एक व्यक्ति या समूह के पूर्वाग्रहों को दूसरों पर थोपने के प्रयास हैं। उनमें से कुछ ने इन विचारों को कला और साहित्य तक यह तर्क देते हुए बढ़ाया कि कलात्मक व्याख्या भी सामाजिक प्रभुत्व को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन की गई एक सत्ता की राजनीति है।

हमारे समय में, व्यक्तिपरकवाद व्यापक हो गया है, विशेष रूप से कला और साहित्य में। व्यक्तिपरक व्याख्याकार तर्क देते हैं कि चूंकि हम अपने आसपास के संसार की वस्तुपरक समझ को नहीं खोज सकते हैं, इसलिए बाइबल सहित कला और साहित्य का अर्थ, हमारे भीतर स्थित होना चाहिए। इसलिए कला और साहित्य में वस्तुपरक अर्थ की बात करने के बजाए, व्यक्तिपरकविद् इस बारे में बात करते हैं कि कैसे संगीत, चित्रकलाएं, पुस्तकें और इन्हीं के जैसी चीजों को विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न जातीय समूहों, विभिन्न आर्थिक वर्गों, विभिन्न लिंगों और इन्हीं के जैसे अन्यों के द्वारा देखा जाता है। और वे विशेष रूप से इस बात में रुचि रखते हैं कि ये विभिन्न समूह अपने विभिन्न सामाजिक एजेंडे की सेवा में कला एवं साहित्य का उपयोग कैसे करते हैं।

अब जबकि हमने अर्थ के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है, तो अब हम बाइबल की व्याख्या पर उनके प्रभाव पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

प्रभाव

सैद्धांतिक रूप से, मसीह के अनुयायी अपने आसपास की संस्कृति की धाराओं को उस तरीके को प्रभावित करने की अनुमति नहीं देते हैं जिसमें वे बाइबल की व्याख्या करते हैं। लेकिन वास्तव में, हम में से कोई भी बाइबल के व्याख्या-शास्त्र के हमारे दृष्टिकोण पर संस्कृति के प्रभाव से पूरी तरह से बच नहीं सकता। हाल के दशकों में, व्याख्या-शास्त्र वाला व्यक्तिपरकवाद अकादमिक चर्चाओं की सीमाओं से परे चला गया है और इतना सामान्य हो गया है कि हमें अधिक से अधिक ऐसे लोगों से मिलते हैं जो इस बात पर जोर देते हैं कि तथ्य के दावें वास्तव में व्यक्तिगत व्यक्तिपरक रायों से कुछ अधिक नहीं हैं। और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वास एवं बाइबल के मामलों में यह विशेष रूप से सत्य है। इस कारण से, हम सभी को उन तरीकों के बारे में अधिक जागरूक बनने की आवश्यकता है जिनमें व्यक्तिपरकवाद ने बाइबल की व्याख्या को हमारे समय में प्रभावित किया है।

तर्कसंगत वैज्ञानिक वस्तुपरकवाद के समान, व्यक्तिपरकवाद ने बाइबल के आलोचनात्मक अध्ययनों और बाइबल के सुसमाचारीक अध्ययनों दोनों को प्रभावित किया है। व्यक्तिपरकवाद से प्रभावित बाइबल के आलोचनात्मक विद्वान अक्सर यह तर्क देते हैं कि बाइबल के पाठ्यांश में कोई भी वस्तुपरक अर्थ नहीं पाया जा सकता है। इसलिए, इसके बजाय कि अपने छात्रों को पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ की खोज करना सिखाएं, वे बाइबल के पाठकों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे स्वयं अपने उद्देश्यों को संतुष्ट करने के लिए, पवित्र शास्त्र को उपयोग करने के द्वारा स्वयं अपने अर्थों को उत्पन्न करें। कुछ लोग यह भी तर्क देते हैं कि वास्तव में यही वह बात है जो नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की व्याख्या करते समय किया था। वे विश्वास करते हैं कि नए नियम के लेखकों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि पुराने नियम के पाठ्यांशों का अर्थ वस्तुपरक मायनों में क्या था, और कि नए नियम के लेखक मुख्य रूप से इस बात से मतलब रखते थे कि पुराने नियम का उपयोग उनके मसीही विश्वासों को बढ़ावा देने के लिए कैसे किया जा सकता है। और आलोचनात्मक व्यक्तिपरकविद् व्याख्याकार तर्क देते हैं कि हमें यही करना चाहिए — कि हमें पवित्र शास्त्र के वस्तुपरक अर्थ के बारे में चिंता नहीं करना चाहिए, और कि हमें स्वयं अपने सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक एजेंडे का बढ़ावा देने के लिए बाइबल का उपयोग करना चाहिए।

बाइबल के आलोचनात्मक अध्ययनों के विपरीत, बाइबल के सुसमाचारिक अध्ययनों ने ज्यादातर चरम व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों से बचने की कोशिश की है। कम से कम सैद्धांतिक रूप में, सुसमाचारीक लोग आमतौर पर स्वीकार करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, और इसलिए यह कि इसका अर्थ व्याख्याकारों के बजाय परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है। लेकिन सुसमाचारीय लोग व्याख्या-शास्त्र पर व्यक्तिपरकवाद के नकारात्मक प्रभाव से बचे नहीं रहे हैं। अनुच्छेद के वस्तुपरक अर्थ के लिए कुछ भी सोचे बिना वे अक्सर पूछते हैं, "यह पाठ्यांश आपके लिए क्या मायने रखता है?" और पाठ्यांश के ऐतिहासिक परिदृश्य के लिए किसी भी चिंता के बिना, उपदेशक एवं बाइबल के शिक्षक अक्सर बाइबल के अनुच्छेदों में समकालीन हितों को देखते हैं।

लेकिन इस तरह की त्रुटियों के बावजूद, व्यक्तिपरकवाद ने फिर भी बाइबल के सुसमाचारीक व्याख्या-शास्त्र के लिए मूल्यवान योगदान दिया है। यह ठीक ही कहा गया है कि हमारे सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, कौशल, योग्यताएं, कमजोरियाँ और सीमाएं पवित्र शास्त्र की हमारी समझ को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। और इसने हमें यह देखने में मदद की है कि जिस तरह पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र को लिखने के लिए प्रेरित मानवीय लेखकों के व्यक्तिपरक दृष्टिकोण का उपयोग किया, उसी तरह से वह हमारे समय में पवित्र शास्त्र के अर्थ को समझने और लागू करने में मदद करने के लिए हमारे स्वयं के व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों का उपयोग करता है।

> बाइबल हमेशा हमें निजी प्रतिक्रिया देने के लिए विवश करती है। बाइबल हमेशा हमें प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के लिए ,चेतावनियों का अनुसरण करने के लिए, और आज्ञाओं का पालन करने को प्रेरित करती है। और इसलिए परमेश्वर के वचन के लिए व्यक्तिगत प्रतिक्रिया का ऐसा पहलू हमेशा होता है जिसकी अपेक्षा वास्तव में की जाती है। परमेश्वर स्वयं अपने वचन में हम से बातें कर रहा है। लेकिन मैं मानता हूँ कि यह पहचानना महत्वपूर्ण है, कि यह वह स्थान नहीं है जहाँ हम बाइबल की व्याख्या करना शुरू करते हैं, जैसे कि सबसे पहला, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, "इस अनुच्छेद से मुझे कैसा महसूस होता है?" या "इस अनुच्छेद के लिए मेरी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया क्या है।?" इससे पहले कि हम उस

> संपूर्ण अर्थ को समझ सकें जो हमारे समकालिन परिस्थिति में बाइबल के पास है हमें यह समझने की आवश्यकता है कि इसके मूल संदर्भ में बाइबल का क्या अर्थ था। और इसलिए बाइबल में और स्वयं इसके बारे में अर्थ को समझने के लिए कड़ी मेहनत करना महत्वपूर्ण है और फिर वहीं नहीं रुकना है क्योंकि हम व्यक्तिगत प्रतिक्रिया पर आगे जाना चाहते हैं। लेकिन बाइबल की व्याख्या करने की प्रक्रिया में ये दोनों महत्वपूर्ण हैं।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

अर्थ के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोण हानिकारक हो सकते हैं जब वे बाइबल के विभिन्न व्याख्याओं का मूल्यांकन करने के लिए कोई मानक नहीं छोड़ते हैं। सरल तथ्य यह है कि पवित्र शास्त्र की कुछ व्याख्याएं अन्यों की तुलना में बेहतर हैं। लेकिन व्यक्तिपरक दृष्टिकोण हमारी आँखों को उन तरीकों में भी खोल सकते हैं जिनमें हमारी पृष्ठभूमि, और व्यक्तित्व, यहाँ तक कि हमारे अंतर्ज्ञान और हमारी भावनाएं अक्सर पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्याओं को प्रभावित करते हैं। और इन प्रभावों को पहचानने से हमें उन्हें और अधिक प्रभावकारी रूप से संभालने में मदद मिल सकती है ताकि हम बाइबल की व्याख्या अधिक जिम्मेदारी से कर सकें।

अब जबकि हमने अर्थ के लिए वस्तुपरक और व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों का पता लगा लिया है, आइए अपने ध्यान को संवादात्मक दृष्टिकोणों की ओर लगाएं।

संवादात्मक

कभी न कभी, हम सभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिनके पास किसी चीज़ के लिए जबरदस्त राय होती है जिसके लिए वे ज़ोर देते हैं कि हर किसी को उनसे पूरी तरह सहमत होना चाहिए। अब, कई बार हम शांति बनाए रखने के लिए उनके साथ बस हाँ में हाँ मिलाते हैं। लेकिन अन्य समयों पर मुद्दा इतना महत्वपूर्ण होता है कि हम इसके बारे में अधिक बात करने पर ज़ोर देते हैं। इस तरह की अच्छी बातचीत में, दोनों लोग स्वयं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और एक दूसरे को ध्यान से सुनने की पूरी कोशिश करेंगे। और आशा होती है, कि जैसे जैसे बातचीत जारी रहती है, सर्वसम्मति के कुछ उपाय सामने आएंगे। खैर, हाल के दशकों में, इस तरह का वार्तालाप या संवाद बाइबल सहित सभी साहित्यों की व्याख्या करने के लिए एक मॉडल बन गया है।

यह शब्द संवादात्मक इस विचार को संदर्भित करता है कि व्याख्या में पाठक और पाठ्यांश के बीच एक प्रकार का संवाद या परिचर्चा शामिल होती है। मूल विचार यह है कि पाठ्यांश का एक वस्तुपरक अर्थ होता है, लेकिन इस वस्तुपरक अर्थ को पाठक और पाठ्यांश के बीच एक व्यक्तिपरक बातचीत या संवाद के माध्यम से सबसे अच्छे से खोजा जाता है। भजन 119:18 में, हम इस तरह के संवाद का एक उदाहरण देखते हैं, जहाँ भजनकार ने परमेश्वर से इस प्रार्थना को किया:

> मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ (भजन 119:18)।

इस भजन में, भजनकार इस तरीके के बारे में बात कर रहा था कि उसने नियमित रूप से पवित्र शास्त्र पर मनन किया। और उसने व्याख्या के एक मौलिक रूप वाले संवादात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त

किया। सबसे पहले, उसने विश्वास किया कि वस्तुपरक अर्थ व्यवस्था में पाया जा सकता है। लेकिन साथ ही, उसने महसूस किया कि व्यवस्था को सही तरीके से समझने के लिए उसे एक व्यक्तिपरक, आँखें खोलने वाला अनुभव चाहिए।

भजनकार परमेश्वर से अपने व्यक्तिपरक प्रभावों को समाप्त करने के लिए नहीं, बल्कि उसकी अंतर्दृष्टि को बढ़ाने के द्वारा उसके व्यक्तिपरक दृष्टिकोण में सुधार करने के लिए कह रहा था। और जैसा कि इस पद का व्यापक संदर्भ हमें दिखाता है, भजनकार अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए व्यवस्था के विषय पर बार-बार लौटता रहा; उसने पवित्र शास्त्र के साथ एक संवाद को बनाए रखा जिसने इसके अर्थ की उसकी समझ में निरंतर सुधार किया।

अर्थ के लिए संवादात्मक दृष्टिकोणों की हमारी खोज उसी रीति से शुरू होगी जैसे कि वस्तुपरक और व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों का हमारा चिंतन था। सबसे पहले, हम संवादात्मक प्रतिरूपों के दार्शनिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझेंगे। और दूसरा, हम बाइबल की व्याख्या पर उनके प्रभाव पर विचार करेंगे। लेकिन फिर हम एक ओर वस्तुपरक और व्यक्तिपरक दृष्टिकोण और दूसरी ओर संवादात्मक दृष्टिकोण की बाइबल वाली समझ के बीच तुलना को पेश करके एक कदम आगे बढ़ेंगे। आइए संवादात्मक दृष्टिकोणों की पृष्ठभूमि को देखने के द्वारा शुरू करें।

पृष्ठभूमि

व्याख्या-शास्त्र के दार्शनिक वाले क्षेत्र में, व्याख्या के संवादात्मक प्रकृति पर जर्मन दार्शनिक, धर्मविज्ञानी और भाषाविद् फ्रेडरिक श्लेअरमाकर द्वारा जोर दिया गया था, जो 1768 से 1834 तक रहे थे। उन्होंने व्याख्या के प्रसिद्ध मॉडल की पेशकश की जिसे "व्याख्या-शास्त्र वाला चक्र" कहा जाता है, जिसके द्वारा व्याख्याकार ग्रंथों या अन्य जटिल वस्तुओं को समझने का प्रयास करते हैं। यह चक्र तब शुरू होता है जब हम किसी वस्तु का सामना करते हैं और शुरूआत में इस अपने दिमाग में संसाधित करते हैं। फिर हम वस्तु का और अधिक सामना करने एवं और अधिक समझ को संसाधित करने के लिए वापस बार-बार लौटते हैं। श्लेअरमाकर के व्याख्या-शास्त्र वाले चक्र को अक्सर अन्य लोगों द्वारा एक व्याख्या-शास्त्र वाले सर्पिल के रूप में वर्णित किया गया है, व्याख्याकारों और अध्ययन की उनकी वस्तु के बीच एक चक्राकार प्रक्रिया जो प्रगतिशील रूप में अधिक से अधिक समझ की ओर बढ़ता है।

विज्ञान में भी संवादात्मक मॉडल सामने आए हैं। 1922 से 1996 तक रहे थॉमस कुह्न जैसे विज्ञान के बीसवीं सदी के दार्शनिकों ने तर्क दिया कि वैज्ञानिक ज्ञान वस्तुपरक वास्तविकता और समझ के प्रतिमानों के बीच पारस्परिक क्रियाओं से पैदा होता है जिन्हें हम वैज्ञानिक जाँच में लाते हैं। किसी भी प्रतिमान की मूल अवधारणा यह है कि हमारे सभी विश्वास आप में जुड़े हुए हैं। वे एक जटिल संरचना में एक साथ फिट बैठते हैं, प्रत्येक एक दूसरे को मजबूती देता और प्रभावित करता है। जब तक नया विश्वास हमारे प्रतिमान को चुनौती नहीं देता, तब तक इसे अपनाना हमारे लिए आसान होता है। लेकिन हम उन नए विश्वासों का विरोध करते हैं जो हमारे प्रतिमान की संरचना को खतरे में डालते हैं। फिर भी, जब हमारे प्रतिमानों का विरोध करने वाले सबूत पर्याप्त होते हैं, तब यह हमें बदलने के लिए मजबूर कर सकता है — कभी कभी क्रांतिकारी तरीकों में जो हमें उन सब बातों को फिर से सोचने पर मजबूर कर सकता है जिन्हें हमने सोचा था कि हम जानते थे। लेकिन बदलाव की मात्रा की परवाह किए बगैर, हमारे मानसिक प्रतिमानों और वस्तुपरक वास्तविकता के हमारे अनुभव के बीच एक प्रकार का संवाद सदैव चलता रहता है, जिसके कारण हम निरंतर दूसरों के प्रकाश में अपने प्रत्येक विश्वासों का फिर से मूल्यांकन करते हैं।

शायद बीसवीं सदी में व्याख्या-शास्त्र के लिए सबसे प्रभावशाली संवादात्मक मॉडल में हैंस-जॉर्ज गदामर का था, जो 1900 से 2002 तक रहे थे। गदामर ने दो क्षितिजों के संलयन के संदर्भ में विज्ञान, दर्शन, ईश्वरीय-ज्ञान, कला और साहित्य में अर्थ की बात की। गदामर की सोच में, एक क्षितिज ही वह सब

कुछ है जिसे किसी विशेष दृष्टिकोण से देखा या समझा जा सकता है। व्याख्या-शास्त्र के मामले में, एक क्षितिज पाठ्यांश का होगा। पाठ्यांश में व्यक्त सभी दृष्टिकोण, और वे सभी निष्कर्ष जो उन दृष्टिकोणों से निकाले जा सकते हैं वे इसके क्षितिज में शामिल होंगे। दूसरा क्षितिज जो होगा वह पाठकों का होगा। इस क्षितिज में उनके सभी दृष्टिकोण, विश्वास, भावनाएं, पूर्वाग्रह और ऐसे ही अन्य शामिल होंगे। जब पाठक पाठ्यांश के क्षितिज के पहलूओं को स्वयं अपने क्षितिज में शामिल करना शुरू करते हैं तो ये क्षितिज जुड़ जाएंगे। जैसे-जैसे पाठक पाठ्यांश में से सीखते हैं, या पाठ्यांश के दृष्टिकोणों को अपनाते हैं, तो पाठ्यांश के क्षितिज में से नए तत्वों को शामिल करने के लिए उनके क्षितिज फैलेंगे।

अब जबकि हमने संवादात्मक मॉडल की पृष्ठभूमि को देख लिया है, तो आइए हम अपने ध्यान को बाइबल वाले व्याख्या-शास्त्र पर उनके प्रभाव की ओर लगाते हैं।

प्रभाव

इस बिन्दु पर अपने उद्देश्यों के लिए, हम अपनी चर्चा को उन कुछ तरीकों पर ध्यान-केंद्रित करेंगे जिनमें सुसमाचारीक लोगों ने पवित्र शास्त्र की अपनी व्याख्याओं को बढ़ाने हेतु अर्थ के लिए संवादात्मक दृष्टिकोणों का उपयोग किया है। विशेष रूप से, सुसमाचारीक लोगों ने जोर दिया है कि बाइबल को पढ़ना किसी सामान्य पुस्तक के साथ संवाद करने से अलग है क्योंकि, अन्य पुस्तकों के विपरीत, बाइबल का हमारे ऊपर पूर्ण अधिकार है। इस कारण से, हम अधिकार-संवादों के रूप में इन मामलों के लिए सुसमाचारीक दृष्टिकोणों की बात करेंगे।

किसी सामान्य दिन के दौरान, हम में से अधिकांश का विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ वार्तालाप होता है। और कौन इसमें शामिल है इस आधार पर ये वार्तालाप अलग-अलग दिशा-निर्देश लेते हैं। जब हम अनौपचारिक रूप से अपने दोस्तों के साथ किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहे होते हैं जिसे हम सब समझते हैं, तो हम बराबरी में एक दूसरे से जुड़ते हैं। वार्तालाप इधर उधर जाता है, और हम सभी सुनने का प्रयास करते हैं और हम सभी एक-दूसरे के दृष्टिकोणों का सम्मान करने की कोशिश करते हैं। लेकिन जब हम महत्वपूर्ण मामलों के बारे में संवाद करते हैं, जैसे हमारा स्वास्थ्य या बच्चों का पालन-पोषण, और हम इसे ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिसके पास हमारी तुलना में कहीं अधिक ज्ञान और विशेषज्ञता है, तो वार्तालाप को अलग रीति से करने में हम समझदार होते हैं। यद्यपि हम जानते हैं कि विशेषज्ञ गलती करते हैं, फिर भी उन्हें सावधानीपूर्वक सुनने की हम पूरी कोशिश करते हैं।

लेकिन अब, कल्पना कीजिए कि आप ऐसे व्यक्ति के साथ वार्तालाप कर रहे हैं जिसके बारे में आप जानते हैं कि वह कभी गलती नहीं करता, ऐसा व्यक्ति जो हमेशा सही होता है। तो आप निश्चित रूप से अपने प्रश्नों और रायों के साथ उस वार्तालाप में आते हैं, लेकिन जो वह व्यक्ति आपसे कह रहा है उसे समझने और स्वीकार करने के लिए आप वह सब कुछ करते हैं जो आप कर सकते हैं।

ठीक है, कई मायनों में, बाइबल की व्याख्या के साथ कुछ ऐसा ही है। हम अपने प्रश्नों और रायों के साथ बाइबल को पढ़ने के लिए आने से बच नहीं सकते हैं लेकिन क्योंकि बाइबल अचूक है, क्योंकि यह हमेशा सही है, तो जो सब कुछ वह हमें बताता है उसे समझने और स्वीकार करने के लिए हम वह सब कुछ करते हैं जो कर सकते हैं।

बाइबल की व्याख्या करना उस सबसे आधिकारिक व्यक्ति, जिसकी कल्पना हम कर सकते हैं, स्वयं परमेश्वर के साथ संवाद करने जैसा है। यह एक संवाद है क्योंकि इसमें पाठकों और पवित्र शास्त्र के बीच एक प्रकार का संवादात्मक "देना और लेना" शामिल है। संवाद के पाठक वाले पक्ष पर, हम सभी कई प्रश्नों, पूर्वाग्रहों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और व्यक्तिगत अनुभवों के साथ बाइबल को पढ़ते हैं। और इनमें से हर एक चीज़ उन बातों को प्रभावित करती हैं जिसे हम बाइबल से समझते हैं। संवाद के पवित्र

शास्त्र वाले पक्ष पर, परमेश्वर निरंतर अपने वचन के माध्यम से जो हम विश्वास करते हैं कभी-कभी उसकी पुष्टि करते हुए, कभी-कभी उसे सुधारते हुए हमसे बात करता है।

> मेरी पृष्ठभूमि — अतीत से और आगे को मेरे अनुभव — वे हैं जो मेरे पास हैं जब मैं पवित्र शास्त्र पढ़ता हूँ; तो उन शर्तों में मैं स्वाभाविक रूप से इसकी व्याख्या करता हूँ, इसके बारे में सोचता हूँ। मुद्दा यह है कि जब मैं पवित्र शास्त्र को पढ़ता हूँ, तो मैं सचेत हो जाता हूँ कि वह करूँ। स्पष्ट रूप से, यही वह बात है जो पवित्र शास्त्र, मेरी पृष्ठभूमि और ऐसी ही बातों को सुनने के लिए मुझे योग्य बनाती है। लेकिन मैं इसे पवित्र शास्त्र को समर्पित करने के पूर्ण इरादे के साथ आता हूँ। मैं पवित्र शास्त्र के समक्ष नम्रतापूर्वक आता हूँ, अपने स्वयं के अनुभवों को लाता हूँ। हाँ. यह मुझे पाठ्यांश को समझने में सक्षम बनाता है, लेकिन मैं इसे यह कहते हुए वापस समर्पित करता हूँ, "ठीक है, क्या मेरी प्रतिक्रियाएं सही हैं? क्या पवित्र शास्त्र उसे जो मैं सोचता हूँ कि इसका अर्थ है, उसकी पुष्टि करता या सही करता है?" इसलिए मैं बार-बार वापस आता और पाठ्यांश को देखता हूँ, पाठ्यांश को सुनता हूँ, पाठ्यांश के समक्ष प्रतीक्षा करता हूँ, पवित्र शास्त्र के पाठ्यांश को समझता हूँ, इसके बड़े संदर्भ में इसे देखता हूँ कि जो परमेश्वर कह रहा है, उसके लिए पवित्र शास्त्र के पाठ्यांश के अनुरूप, कहाँ पर मेरी प्रतिक्रियाओं को फिर से आकार देने की आवश्यकता है। और हाँ बेशक, वे जितना अधिक पवित्र शास्त्र के अनुरूप बनते हैं, उतना ही बेहतर मैं पवित्र शास्त्र को समझता हूँ। जितना बेहतर मैं पवित्र शास्त्र को समझता हूँ, फिर उतना ही मैं अपनी प्रतिक्रियाओं को पवित्र शास्त्र के पास लाने और उन्हें पवित्र शास्त्र द्वारा आकार दिए जाने में सक्षम होता हूँ।
>
> — डॉ. गैरी कॉकरिल

जब हम बाइबल के अधिकार तले समर्पण करते हैं, तो हम इससे बुद्धि, शिक्षा और प्रोत्साहन प्राप्त करने की अपेक्षा करते हैं। हम भरोसा करते हैं कि आत्मा अपने विवेक से, हमें पवित्र शास्त्र के वास्तविक अर्थ के लिए अधिक से अधिक प्रबुद्ध करता है, और हमें इसे हमारे जीवनों में अधिक विश्वासपूर्वक रीति से लागू करने में सक्षम बनाता है। इसलिए, जितना अधिक हम बाइबल को जिम्मेदारी से पढ़ते और व्याख्या करते हैं, उतना ही अधिक हम अपनी समझ के सही होने की अपेक्षा करते सकते हैं — और उतना ही अधिक हमारे वरदान मजबूत, हमारी सोच को चुनौती, हमारे सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का मूल्यांकन और हमारे व्यक्तिगत अनुभवों का बदलाव किया जा सकता है।

> यह महत्वपूर्ण है कि हम पवित्र शास्त्र के अधिकार के प्रति समर्पण करें क्योंकि ऐसा करना परमेश्वर के अधिकार के प्रति समर्पण के लिए एक मनोवृति को दर्शाता है। स्वयं परमेश्वर के वचनों के रूप में, जब हम पवित्र शास्त्र के अधिकार के प्रति समर्पण करते हैं या नहीं करते हैं, तो हम स्वयं परमेश्वर के प्रति अपनी मनोवृति के बारे में कुछ कह रहे हैं। और इसलिए, हम सावधान रहना चाहते हैं कि हम पवित्र शास्त्र को ऐसे न पढ़ें जैसे कि उनके न्यायी हैं, लेकिन उनके अधिकार के तले, क्योंकि हम पहले स्थान पर परमेश्वर के अधिकार के तले आते हैं।
>
> — डॉ. रॉबर्ट जी लिस्टर

अब जबकि हमने संवादात्मक मॉडल और बाइबल वाली व्याख्या-शास्त्र पर उनके प्रभाव पर विचार कर लिया है, तो आइए वस्तुपरक और व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों के साथ अर्थ के लिए संवादात्मक दृष्टिकोण की तुलना पर गौर करते हैं।

तुलना

अर्थ के लिए वस्तुपरक और व्यक्तिपरक दृष्टिकोण कुछ मौलिक तरीकों में एक दूसरे का विरोध करते हैं, लेकिन उनमें कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण आम बात है। चरम सीमाओं पर, दोनों ही मॉडल अंततः व्याख्याकारों के अधिकार को स्वयं बाइबल के अधिकार के बराबर या उससे बड़ा बनाते हैं। हमारे तर्कसंगत और वैज्ञानिक वस्तुपरक दृष्टिकोण कितने विश्वसनीय हैं इसका आंकलन वस्तुपरकवाद, वास्तविकता से अधिक करने की प्रवृति रखता है। हमारे व्यक्तिगत अंतर्ज्ञान और राय कितने विश्वसनीय हैं इसका आंकलन व्यक्तिपरकवाद, वास्तविकता से अधिक करने की प्रवृति रखता है। लेकिन दोनों मामलों में परिणाम एक जैसे हैं: हम पवित्र शास्त्र के ऊपर न्यायी बन बैठते हैं। इसलिए, भले ही ये दृष्टिकोण कुछ सहायक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, फिर भी संवादात्मक मॉडल हमें अपनी कमजोरियों के साथ और बाइबल के दिव्य अधिकार के साथ अधिक पर्याप्त रूप में कार्य करने में मदद करता है।

इस अध्याय में, हमने समग्र संवादात्मक दृष्टिकोणों के बजाय मुख्यतः अर्थ के लिए सुसमाचारीक अधिकार-संवाद वाले दृष्टिकोणों से संबंध रखा है। इसलिए, हमारी तुलना पहले अधिकार-संवाद और वस्तुपरक मॉडल पर केंद्रित होगी और दूसरा अधिकार-संवाद और व्यक्तिपरक मॉडल पर। आइए अधिकार-संवाद और वस्तुपरक दृष्टिकोणों के साथ शुरू करें।

अधिकार-संवाद और वस्तुपरक

वस्तुपरक मॉडल के जैसे ही, एक अधिकार-संवाद मॉडल स्वीकार करता है कि पवित्र शास्त्र के पाठ्यांश में वस्तुपरक सत्य पाया जा सकता है। बाइबल हमारे लिए परमेश्वर का वचन और प्रकाशन है, और जो कुछ वह कहता है वह वस्तुपरक रीति से सत्य और सार्थक है। और व्याख्या के तरीके इस प्रकाशन को समझने में हमारी मदद कर सकते हैं जब तक कि तरीकें बाइबल के मानकों का अनुपालन करते हैं। जैसा कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 2:15 में तीमुथियुस को बताया:

> अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)।

यहाँ, पॉलुस ने संकेत दिया कि सत्य के वचन को काम में लाने का एक सही तरीका है। और महत्वपूर्ण रूप से, उसने इस सही तरीके की तुलना एक काम करने वाले की मजदूरी से की। उसका तात्पर्य था कि बाइबल को पढ़ने के लिए सावधानीपूर्वक अध्ययन और जिम्मेदारी वाली कार्यप्रणाली की आवश्यकता होती है। ये विधियाँ अपने में और अपने लिए पर्याप्त नहीं हैं। लेकिन वे फिर भी जिम्मेदार वाली व्याख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जबकि एक अधिकार-संवाद मॉडल, व्याख्या-शास्त्र वाले वस्तुपरकवाद के साथ इन समग्र दृष्टिकोणों को साझा करता है, यह वस्तुपरकविद् की चरम सीमाओं के साथ जुड़े कुछ गंभीर खतरों को टालता है। यह हमें सोचने के इस खतरे से बचने में मदद करता है कि जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तो हममें से कोई बहुत अधिक वस्तुपरक न बन सके। और इससे भी अधिक, एक अधिकार-संवाद दृष्टिकोण हमें यह याद रखने में मदद करता है कि तर्कसंगत और वैज्ञानिक निर्णय को हमेशा पवित्र शास्त्र के अधिकार के लिए समर्पण में देखा जाना चाहिए।

यह देखने के बाद कि कैसे अधिकार-संवाद दृष्टिकोण वस्तुपरक मॉडल के साथ तुलना करता है, आइए अधिकार-संवाद और व्यक्तिपरक मॉडल के बीच हमारी तुलना को देखें।

अधिकार-संवाद और व्यक्तिपरक

जिस प्रकार एक अधिकार-संवाद मॉडल कुछ तरीकों में वस्तुपरक मॉडल जैसा दिखता है, वैसे ही इसमें व्यक्तिपरक मॉडल के जैसी समानताएं भी हैं। यह मानता है कि हम सभी पवित्र शास्त्र को उन दृष्टिकोणों और विश्वासों के साथ पढ़ते हैं जो बाइबल के अनुच्छेदों की व्याख्या करने के हमारे तरीके को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, यह पवित्र शास्त्र और व्यक्तिपरकवाद के साथ सहमत है कि व्यक्तिगत, व्यक्तिपरक योगदान जिसे हम व्याख्या के लिए लाते हैं, वे मूल्यवान हैं।

पवित्र शास्त्र बार-बार इसी तरह के व्यक्तिपरक विचारों पर जोर देता है, जैसे कि भजन 119 में, जहाँ यह परमेश्वर की व्यवस्था पर मनन करने, अपने पूरे दिल से परमेश्वर की सच्चाई को खोजने, जो परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में प्रकट किया है उसे देखने के लिए खुली हुई आँखों के लिए प्रार्थना करने, बाइबल को आनंद और आज्ञाकारिता के मनोभाव से पढ़ने, व्यवस्था से प्रेम करने क्योंकि यह परमेश्वर का अच्छा वरदान है, पवित्र शास्त्र की आज्ञापालन करने की शपथ लेने, और परमेश्वर के आधिकारिक वचन के साथ हमारे संवाद के कई अन्य व्यक्तिपरक पहलूओं की बात करता है। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, भजन 119:97 को सुनिए:

> आहा! मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हूँ! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है (भजन 119:97)।

इस पद में, भजनकार ने संकेत दिया कि परमेश्वर की व्यवस्था के लिए उसके व्यक्तिगत प्रेम ने पवित्र शास्त्र के उसके अध्ययन और उसकी समझ को प्रभावित किया। और उसने पवित्र शास्त्र पर ध्यान देने के बारे में लिखा — एक व्यक्तिपरक अभ्यास जो कठोर कार्यप्रणाली का हिस्सा नहीं है — यह दर्शाते हुए कि उसने व्यक्तिगत रीति से बाइबल के वचनों पर ध्यान किया और शायद अपने को प्रबुद्ध करने के लिए पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा भी की।

लेकिन भले ही अधिकार-संवाद दृष्टिकोण, व्यक्तिपरक मॉडल के साथ इन जैसी समानताओं को साझा करता है, यह महत्वपूर्ण तरीकों में उनसे अलग भी है। उदाहरण के लिए, कुछ व्यक्तिपरकविदों के विपरीत, अधिकार-संवाद मॉडल चेतावनी देता है कि यदि हम अपनी व्यक्तिपरकता को पवित्र शास्त्र के अधिकार तले समर्पित नहीं करते हैं, तो बाइबल की हमारी व्याख्याएं गंभीर रूप से बाधित होंगी। और इसकी पुष्टि स्वयं पवित्र शास्त्र ने की है, 2 पतरस 3:16 जैसे स्थानों में, जहाँ पतरस ने पौलुस के लेखन के बारे में इस प्रकार बात की:

> वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:16)।

पतरस ने स्वीकार किया कि पौलुस की पत्रियों में कुछ बातें "समझना कठिन है।" लेकिन उसने यह भी कहा कि कुछ पाठक अज्ञानता और आत्मिक चंचलता के कारण इन कठिनाइयों के माध्यम से काम करने में विफल रहते हैं। और इन व्यक्तिपरक विफलताओं के परिणामस्वरूप, वे समर्पण के बिना अध्ययन करते हैं और पौलुस के लेखन के अर्थ को विकृत करते हैं।

जैसे कि हमारा अधिकार-संवाद मॉडल संकेत देता है, बाइबल की जाँच एक आजीवन प्रक्रिया है जिसमें पवित्र शास्त्र हमें बदल देता है और हमारे मसीही विश्वास में बढ़ने और परिपक्व होने का कारण

बनता है। जैसे-जैसे हम परिपक्व बनते हैं — यह मानते हुए कि हम जिम्मेदार तरीकों में व्याख्या के बाइबल वाले तरीकों का उपयोग करते हैं — तो अधिकार-संवाद मॉडल बाइबल के वस्तुपरक अर्थ के बारे में हमारी समझ को अधिकाई के साथ बढ़ाएगा। यह परिणामस्वरूप, आगे व्यक्तिगत, व्यक्तिपरक विकास का कारण बनता है, और प्रक्रिया जारी रहती है। इस तरह से, बाइबल के साथ हमारे संवाद को एक सर्पिल के रूप में सोचा जा सकता है जो बार-बार आधिकारिक पाठ्यांश और पाठक के बीच चक्कर काटता है। इस सर्पिल में हमारी भागीदारी का लक्ष्य बाइबल पाठ्यांशों के अर्थ के अधिक से अधिक करीब जाना है। यदि सब ठीक चलता है, तो सर्पिल जितने अधिक घेरे बनाता है, यह उतना ही मजबूत, एवं पवित्र शास्त्र के वास्तविक अर्थ के करीब पहुँच जाता है।

और कौन सी बात इस संवाद को सफल बनाती है? जैसा कि हमने उल्लेख किया है, यह निश्चित रूप से हमसे कड़ी मेहनत की माँग करता है। लेकिन हमारे प्रयास तब तक बेकार हैं जब तक कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें पवित्र शास्त्र के उत्कृष्ट समझ और अनुप्रयोग की ओर नहीं ले जाता है। आत्मा के कार्य के कारण, हम आशा कर सकते हैं कि जब हम ईमानदारी से अपने आप को उसके लिए और उसके वचन के लिए समर्पित करेंगे, तो बाइबल की व्याख्या करने की हमारी क्षमता बढ़ जाएगी।

> आप बाइबल को अपने स्वयं के दृष्टिकोण और अपनी स्वयं की परिकल्पना के साथ पढ़ते हैं — इसे कैसे समझा जाए — लेकिन यदि आप प्रार्थनापूर्वक पाठ्यांश के साथ वार्तालाप करना जारी रखते हैं, तो पाठ्यांश के वास्तविक अर्थ को गहराई से समझने और उसके करीब आने के लिए पाठ्यांश आपको एक सर्पिल में ले जाएगा। तो कहानी यह है, या मुद्दा यह है, कि जितना अधिक आप स्वयं पाठ्यांश के साथ प्रार्थना पूर्वक बातचीत करते हैं, उतना ही अझिक पाठ्यांश आपके दृष्टिकोण और समझ को प्रभावित करेगा, और आप उस पाठ्यांश में जीवित परमेश्वर के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए और करीब आ जाएंगे।
>
> — डॉ. पी. जे. बायज़

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने अर्थ के लिए कई तरह के दृष्टिकोणों का सर्वेक्षण किया है जिन्हें व्याख्याकारों ने शताब्दियों के दौरान ग्रहण किया। हमने उन वस्तुपरक दृष्टिकोणों को देखा है जो सिर्फ पवित्र शास्त्र के भीतर अर्थ खोजने की प्रवृति रखते हैं, व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों को देखा जो पवित्र शास्त्र के अर्थ को इसके पाठकों के दृष्टिकोण से खोजने की प्रवृति रखते हैं, और संवादात्मक दृष्टिकोण को देखा — विशेष रूप से अधिकार-संवाद दृष्टिकोण को, जो कहता है कि पाठक आधिकारिक बाइबल के पाठ्यांशों के साथ अपने वार्तालाप के माध्यम से अर्थ को खोजते हैं।

कभी न कभी, हम सभी ऐसे लोगों से मिलें हैं जो वस्तुपरकवाद और व्यक्तिपरकवाद की चरम सीमाओं पर जाते हैं। पवित्र शास्त्र को समझने और लागू करने के लिए इनमें से कोई भी तरीका पर्याप्त नहीं है। हमें हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे त्रुटिपूर्ण, व्यक्तिपरक दृष्टिकोण निरंतर हमारी समझ को प्रभावित करते हैं कि बाइबल का क्या अर्थ है। लेकिन साथ ही, बाइबल का क्या अर्थ है, हमें उसे सुनने और समर्पण करने के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए। जैसे-जैसे पवित्र आत्मा इस तरह के अधिकार-संवाद में पवित्र शास्त्र के साथ बातचीत करने के हमारे प्रयासों को आशीषित करता है, हम बाइबल की बेहतर और अधिक जिम्मेदारी वाली व्याख्याओं की ओर आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।